दशहरे का आनन्द

दशहरे का त्योहार दुर्गादेवी को अर्पण किया जाता है।

दुर्गा देवी अर्थात शक्ति स्वरूपिणी।

शक्ति की सबको आवश्यकता है।

हमारी आन्तरिक शक्ति यदि क्षीण हो जाए तो हम कुछ नहीं कर सकते परन्तु जब यह बढ़ जाती है तो सब कुछ कर सकते है। शक्ति होने से हम सशक्त हो जाते हैं और शक्ति के बिना अशक्त।

प्राचीन काल में एक स्त्री कैसे शक्ति स्वरूपिणी हो गई?

कैसे उसने इतनी शक्ति प्राप्त कर ली?

शक्ति सिर्फ उसी के पास है क्या?

प्रत्येक व्यक्ति शक्ति-स्वरूप हो सकता है।

दुर्ग यानि अमेद्य। हममें जितनी शक्ति है, उतने ही अभद्य है हम। शक्ति के अभाव में छेदन और भदन किया जा सकता है। शक्ति को प्राप्त कर लेने से ऐसा नहीं होता।

आनापानसति-विपस्सना मार्ग से ही अपने को शक्ति स्वरूप बना सकेंगे। स्वयं को दुर्गा जैसे अभद्य बनाने का यही विधान है।

तब नवरात्र ही नहीं, हर रात दशहरा ही है।

हर दिन त्यौहार, पर्व व उत्सव मना सकते हैं।